BA-II (H)
मैथिली
पेपर- तृतीय पत्र

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar

जीवन-यात्रा

हरिमोहन झा आधुनिक मैथिली साहित्यक सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाकार छथि। मैथिली के लोकप्रिय बनेबा मे, मैथिली साहित्यक प्रति लोकरुचि उत्पन्न करबाक मे जतेक सहायक हरिमोहन झा रचना भेल अछि ततेक विद्यापति के छोड़ि अन्य ककरो नहि।

हरिमोहन झा बाल्यावस्थामे हि अपन पिता जनार्दन झा 'जनसीदन' सँ साहित्य-चर्चाक संग, साहित्य लेखन खूब प्रभाव पड़ल। ओ लेखन शुरू कऽ देलथि।

हरिमोहन झाक जन्म 18 सितम्बर 1908 ई० के वैशाली जिलाक कुमर बाजितपुर ग्राम मे भेलनि। हरिमोहन झाक शिक्षा-दिक्षा गाम हि सँ शुरु भेलनि। झा अत्यन्त प्रतिभाशाली छात्र छलाह। मैट्रिक प्रथम श्रेणी

(2)

मे उत्तीर्ण भेल, 1927 ई० मे बिहार आ उड़ीसा मे आइ० ए०मे प्रथम स्थान हिनका प्राप्त भेलनि। पटना विश्वविद्यालय सँ दर्शन शास्त्र मे एम० ए० कयलनि मुदा बी० ए० हिनका अँग्रेजी ऑनर्स मे द्वितीय स्थान भेटलनि। पटना विश्वविद्यालय मे दर्शन-शास्त्रक व्याख्याताक रूपमे हिनक नियुक्ति भेलनि। विश्वविद्यालय सेवा आयोगक रिसर्च प्रोफेसरक रूप मे सेहो पाँच वर्ष धरि कार्य कयलनि। हिनक मृत्यु 23 फरवरी 1984 ई० के भेलनि।

दर्शनशास्त्र व्याख्याताक रूपे एंव विद्वान रूपे हिनक अखिल भारतीय महत्व छल। भारतीय दर्शन परिचय नामक ग्रंथ प्रकाशित भेल दु खण्ड मे। न्यायदर्शन तथा वैशेषिक दर्शन।

मैथिली मे लिखित प्रो० हरिमोहन झाक रचनाक सूची बड़ पैघ अछि, मुदा समता रखबा धरि पुस्तकाकार संकलित नहि भ सकल अछि।

हिनक प्रकाशित पुस्तक अछि- कन्यादान, तथा द्विरागमन (उपन्यास), खट्टर ककाक तरंग (व्यंग्य), जीवयात्रा (आत्म कथा) - चर्चरी (विविध विधाक रचनाक संग्रह)

प्रो० हरिमोहन झाक पहिल उपन्यास कन्यादान 'मिथिला' मे प्रकाशित भेल। कन्यादान प्रकाशित भेला परतँ प्राय: कोनो साक्षर व्यक्ति हुनक नामसँ अपरिचित नहि छलाह एहि उपन्यास मे प्रयुक्त गद्यक रचना-शैली लोकसम्मत स्वाभाविक प्रवाहसँ परिपूर्ण बड़ रोचक भेल। एहिमे मिथिलाक ग्राम्य-जीवनक स्पष्ट यथार्थ ओ साकार चित्रण भेल तथा निहित हास्य-व्यंग्य मनोरंजके नहि, मार्मिक सेहो भेल छल। वस्तुत: कन्यादानक प्रकाशन भेलासँ मैथिली साहित्यक प्रति सामान्य लोकक रुचि जागल तथा असंख्य मैथिली पाठकक निर्माण भेल छल। प्रो० झाक उपन्यास सामाजिक समस्या पर आधारित छल। मिथिलाक अशिक्षा एवं आंग्ल शिक्षाक विसंगति

(5)

ओ विकृत पर व्यंग्य करैत, चुटकी लैत हँसैत-हँसबैत लोककेँ मनोरंजन करैत छथि।

प्रो० हरिमोहन झाक दोसर उपन्यास थिक द्विरागमन। कन्यादान एतेक लोकप्रिय भेल ओहि के बाद द्वितीय भाग द्विरागमन लिखि देलनि। कन्यादान दुखान्त छल, जकरा आगाँ बढ़ा द्विरागमन मे सुखान्त कऽ देल गेल। वस्तुतः कन्यादान मे आधुनिकता ओ प्राचीनता दुहुक विकृतिमूलक संघर्षक समस्याक चित्रण भेल छल - अशिक्षित बुच्ची दाइक संग आंग्ल-शिक्षित सी० सी० मिश्रक विवाह करब, ताहि समस्या क समाधान द्विरागमन मे भेल अछि। एहि उपन्यास क लोकप्रियताक कारण छल कि मैथिल समाजक विविध प्रसंग ओ व्यक्तिक सफल शब्द-चित्रांकन।

हरिमोहन बाबू कन्यादान क बाद प्रणम्य-देवता हुनक कथा-संग्रह प्रकाशित भेल ओतकर पश्चात खट्टरककाक तरंग। ई तीनू पुस्तक हुनक कीर्ति-ध्वजाक मानदण्ड थिक। एहिसँ अतिरिक्त हुनक रंगशाला, चर्चरी, एकादशी प्रकाशित भेल। जतेक पत्र-पत्रिका बहरायल ताहिमे हुनक विविध

विधाक अनेकानेक कृति प्रकाशित होइत छल। काकोर प्रोत्साहन सदैव लोकप्रिय बनल रहलाह। मैथिल समाजक रहन-सहन, रीति-नीति आदि विभिन्न पक्षक पर ओ मधुर परिहास आदि रचने होथि, ओ निश्चित दार्शनिक छलाह तैं हुनकामे चित्रण-शीलता एवं तर्क-बुद्धि सेहो छल। संगहि हुनक जीवनक संगति-विसंगतिके सहज रूपे भोगैत ओकर चित्रणसँ वातावरणकेँ प्रफुल्लित करबाक गुण, शृंगारिक प्रसंगहुक पुट देइ हुनक रचनाकेँ विलक्षण रसास्वाद्य बना दैत छल। हुनक जीवन-दर्शन छल —

"केओ केओ कहैत छथि जे ई (सांसारिक पात्र ओ विषय) मिथ्या-मायाक खेल थिक। यदि सैह बात हो तँ गम्भीर चिन्ता करबाक प्रयोजन की? हँसी-हँसिकेँ जीवनक आनन्द किएक ने लेल जाए? क्षणिके विनोद सही, रसक छिलका तँ भेटत। कोन ठेकान, कदाचित् एतबे मात्र सत्य होइक।"

(रंगशालाक भूमिकासँ)

प्रो० हरिमोहन झाक ~~खट्टर~~ खट्टरककाक तरंग इनक आलोचक लोकनिक सर्वाधिक आक्रमणक केन्द्र बनल छल। खट्टरकका प्रो० झाक अमरपात्र सृष्टि थिकाह - मिथिलाक गोनू झाक परम्पराक परिहासप्रिय तँ अवश्य, मुदा धूर्त नहि, तार्किक ओ स्पष्टवक्ता - स्वच्छन्द चिन्तन ओ बुद्धि विलासक प्रतीक, जे अँगाक तरंगमे वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद - सभक, धज्जी उड़ा दैत छथि। हुनका सामाजिक रूढ़ि ओ अन्ध-विश्वासपर प्रहार करबाक हेतु सभा सोंटा लेने तैयार रहैत छथि। प्रो० झा जे लिखने छथि से एतँ उद्धरणीय थिक। ओ लिखैत छथि —

" खट्टरककामे गुण किंवा अवगुण छैन्ह जे ओ स्पष्ट-वक्ता छथि। धाख-संकोच वा लोइ-लपटाइ नहि राखैत छथि। तैं किछु गोटा हुनका पर अश्लीलताक दोषारोपण करैत छथिन्ह। परन्तु यैह यथार्थवादिता थिक। त खट्टरककाक विशेषताक अस्तित्व छैन्ह। यदि भिन्न-भिन्न प्रसंगसँ ओहन-ओहन प्रसंगकें हटा देल जाय, त ई तहिना हैत जेना ओलक चटनीसँ चुनि-चुनिक छीमर मरचाइ ओ आदिक सँड बहार क' देल जाय।"

प्रो० हरिमोहन झाक रचनाक मुख्य उद्देश्य छल अवश्य परिहास-विनोदक माध्यमसँ हँसि-हँसिकें जीवनक आनन्द लेब। ओ आधुनिक प्रगतिक पर्यावेक संग वर्तमान जीवनकें समंजित करब प्रयासक करैत छलाह, से स्वाह वर्तमान परिवर्तित जीवन-प्रणालीसँ सम्बन्ध हो अथवा वर्तमान नैतिक वा भौतिक मुल्यसँ। उदाहरणार्थ प्राचीन सभ्यता औषधक खट्टरककातरंग मे प्रो० हरिमोहन झा भारतीय सभ्यता-संस्कृतिक हिन्दु तत्वक व्यंग्यपूर्ण आलोचना करबाक अन्तर देत छवि -

"साँप ससरिक कतहुसँ कतहु चलि गेल आओर हम सभ लाठी ल' क लकीर पीटि रहल छी। युग बदलि गेल, परिस्थिति बदलि गेल, परन्तु हम प्राचीन संस्कृतिक नामपर लकीरमंजन करैत छी जे धर्मक रक्षा क' रहल छी।"

प्रो० हरिमोहन बाबू अन्तिमंत धरि स्वय जीवन पर आधि आधारित परिपूर्ण घटनाक संग रचना लिखब लेलानि। प्रो० झाक जीवन यात्रा (आत्मकथा) मे उमित छानिह —

" अपना जीवन पर दृष्टिपात करै छी तँ एकता खेल एकाँ करैत पड़ैत अछि। लोंत

आछि जेना रहि जीवन - नौकाक सृष्टिकार हमरा मुख्यतः हास्य - विनोदक पोर्टफोलियो दऽ कऽ रहि नाटकशाला मे पठौने होथि। किछु दिन और पार करबाक बाँकी अछि। तकरा बाद जीव जवनिकापात।" (जीवन-यात्रा)

वस्तुतः प्रो० हरिमोहन झा मैथिलीमे हास्य-व्यंग्य-विनोदकेँ व्यापक स्तरपर प्रतिष्ठित कयल, एकटा विस्तृत पृष्ठभूमिक निर्माण कयल सेहो क्रम महत्वपूर्ण नहि अछि। मैथिली साहित्यकेँ नित-नव-नव रीतिएँ, नव-नव भंगिमासँ, नव-नव गति ओ नव-नव दिशामे विकास करबाक हेतु स्वतंत्र छोड़ि देलकै।

समाप्त

Samujit
16/04/20